हौसला और सम्मान दें,
लड़कियों के सपनों को उड़ान।

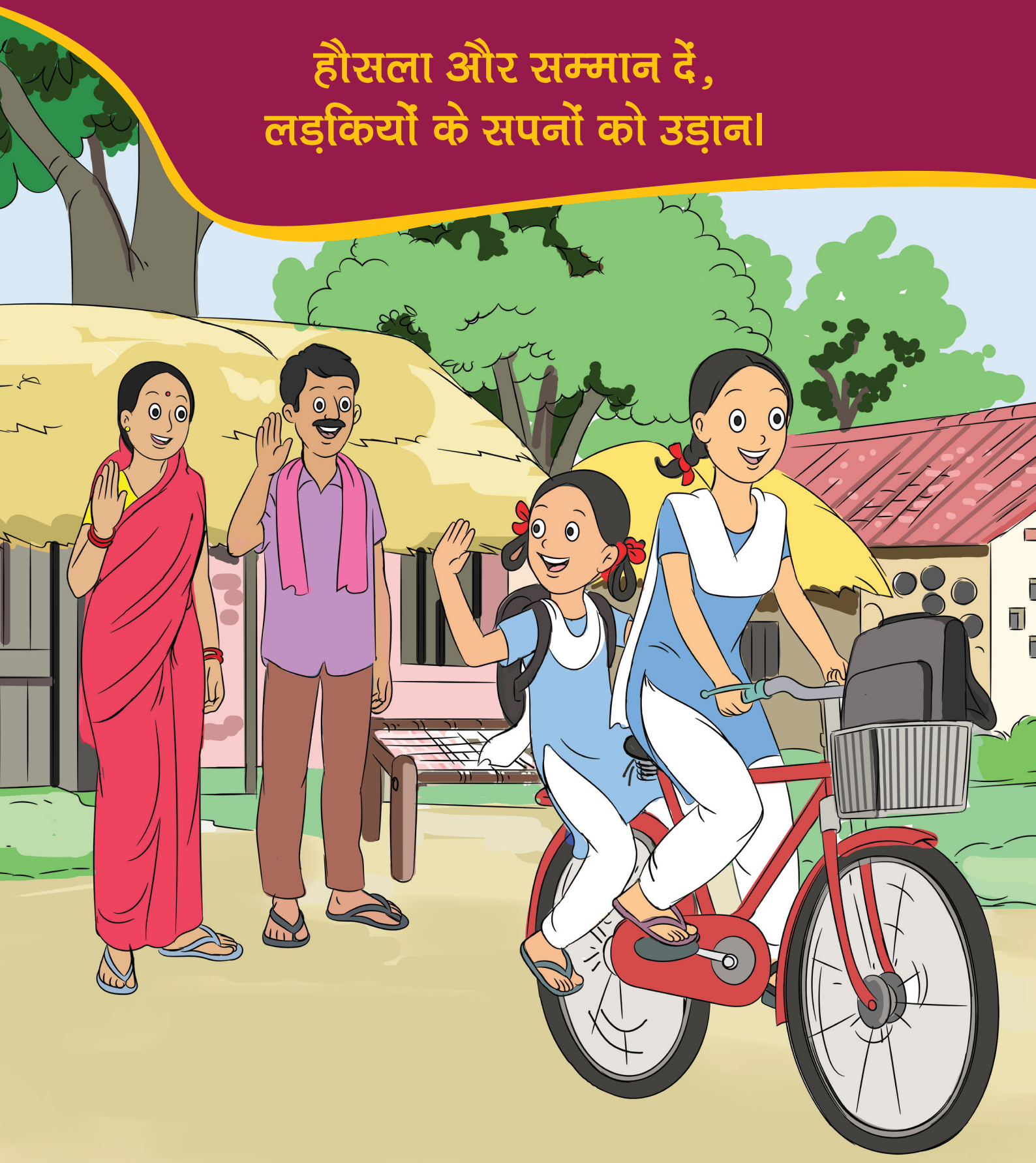

नुक्कड़ नाटक पटकथा

सुनैना हुई सयानी

पहला दृश्य

सूत्रधार (डफली बजाता हुआ और लोगों को बुलाता हुआ)।

सुनो, सुनो, सुनो.....

सुनो सुनो ए भौजी, भैया,

आओ सुनो ए दादी, मईया!

चलो देखें हम एक नई कहानी,

क्योंकि सुनैना बिटिया अब हो गई सयानी!

मां–बाप को हर वक्त उसकी चिंता सताए,

ताकि उनकी बेटी खुष रह पाए!

आओ देखें उसकी खुषी का क्या फैसला किया,

कैसे अपनी बेटी को खुषियां दिया!

आओ आओ देखो देखो,

आओ आओ देखो देखो.....।

दूसरा दृश्य

तेजू के घर में शादी का माहौल।

(गांव की औरतें आंगन में बैठ गीत गाते हुए) बन्नो तेरा मुंखड़ा, चांद का टुकड़ा, बन्नो तेरा मुंखड़ा, चांद का टुकड़ा.....।

फौलादः अरे भई तेजू की बिटिया के शादी के लड्डू खाए जाओ, तेजू के गुण गाए जाओ।

बहादूरः हां हां, आन का दाना चाप के खाना मर जाना परवाह नहीं।

फौलादः हा हा हा.....!

बहादूरः अरे भई अपना तेजू कहां गया?

तीसरा दृश्य

मुनियाः (अपनी बेटी को तैयार करते हुए) मेरी बिटिया को किसी की नजर न लग जाए।

तेजूः (अपनी बेटी को तैयार देखकर) अरे वाह मुनिया! तुमने तो सुनैना को एकदम हिरोइन जैसे सजा दिया, देखो तो हमारी बिटिया कितनी सुंदर लग रही है।

मुनियाः मैं तो हमेषा यही प्रार्थना करती हूं कि सुनैना जहां भी जाए हमेषा खुष रहे, हमारे हिस्से की भी खुषियां भगवान इसकी झोली में डाल दे।

तेजूः तुमने सही कहा मुनिया।

सुनैनाः मां मैं अभी आई (सुनैना यह कह कर वहां से चली जाती है)।

मुनियाः (उदास होते हुए) हम जो कर रहे हैं वह ठीक तो है न!

तेजूः क्या मतलब?

मुनियाः मतलब, कल तक तो गोद में खेलती थी और आज इसके ब्याह की तैयारी। अभी इसकी उम्र ही क्या हुई है!

तेजूः मुनिया, लड़की देखते–देखते पालने से झूले पर और झूले से डोली पर कब चढ़ने के लिए तैयार हो जाती है, पता भी नहीं चलता।

मुनियाः हां पर, अभी थोड़ी और पढ़–लिख लेती तो!

तेजूः सुनैना की चिंता मुझे भी है, पर क्या करें! बेटी तो पराया धन होती है और पराये धन को घर में रखना कैसी समझदारी है!

मुनियाः पर हम कहीं जल्दी तो नहीं कर रहे हैं न?

तेजूः जल्दी क्या, अब अधेड़ उमर तक बेटी को बैठा कर रखेंगे। कल को कुछ ऐसा–वैसा हो गया तो!

मुनियाः क्या ऐसा–वैसा जी?

तेजूः अपने माता–पिता के लिए बेटियां बहुत बड़ी जिम्मेदारी होती है। मैंने बोला न बेटियां पराया धन होती हैं। कल को कुछ ऐसा–वैसा न होने पाए, इससे पहले उसका ब्याह कर अच्छे से उनके घर भेज देने में ही समझदारी है। तुम समझती क्यों नहीं हो, जो कुछ भी हो रहा है सही हो रहा है। अब अपनी अकल मत दौड़ा। तुमने कभी दहेज की बात सोची है?

मुनियाः दहेज की कौन सी बात!

तेजूः बेटी जितनी बड़ी होती है उसकी उम्र के साथ–साथ दहेज बढ़ता जाता है। लड़का अच्छा है, घर अच्छा है और नेक–नगद का भी खर्चा नहीं है।

मुनियाः माना कि घर परिवार सब अच्छा है, पर फिर भी सुनैना की चिंता सता रही है।

तेजूः तू उसकी चिंता ज्यादा मत कर। जा जल्दी से सुनैना को बाहर ला, सब उसका इंतजार कर रहे हैं।

चौथा दृश्य

तेजू को उसके दोस्त घर से बाहर बुलाते हुए।

बहादूरः अरे तेजू! लड्डू और खिलाएगा या बस पानी ही पिलाएगा।

फौलादः देखो भई, शादी के लड्डू जमकर खाओ, वरना भूखे मर जाओ।

बहादूरः हा हा हा.....!

पांचवां दृश्य

सूत्रधार (डफली बजाता हुआ)।

सुनैना जब से सयानी बनी,

तब से घर में उसकी शादी की बात चली!

तेजू ने उसका जल्दी से रिष्ता किया,

उसे पढ़ाई भी न करने दिया!

लेकिन मुनिया को सुनैना की हर वक्त चिंता सताए,

इसके लिए वह तेजू को भी समझाए!

पर तेजू ने न किसी की मानी,

क्योंकि सुनैना हो गई है सयानी!

छठा दृश्य

मुनिया और तेजू बात करते हुए।

मुनियाः आज सुनैना मुझसे बोल रही थी कि वह अभी आगे पढ़ना चाहती है।

तेजूः हां तो पढ़ ले, हम कौन सा मना कर रहे हैं उसे। जब तक उसका ब्याह नहीं हो जाता जितना मन करे उतना पढ़ ले, क्योंकि उसके बाबू जी के पास इतना पैसा नहीं कि उसे सारी उम्र घर बैठा कर पढ़ाते रहें।

मुनियाः अरे उसकी टीचर जी उसकी पढ़ाई के लिए कोई योजना बता रही थी, जिससे वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सके।

तेजूः योजना के बारे में बता रही थी?

मुनियाः हां वह कह रही थी कि उसे पहले पढ़ाई पूरी करनी है फिर शादी। अगर इस उम्र में उसका ब्याह किया, तो तुम्हें जेल भी हो सकती है।

तेजूः कौन सुना रहा है उसको यह सब बकवास?

मुनियाः उसकी टीचर जी ने ही ये सब बताया।

तेजूः तुम सुनैना का घर से निकलना बंद करो। सब रोज–रोज उसको नई पट्टी पढ़ाते हैं और ये आकर हमारा दिमाग खाती है।

मुनियाः अभी से सुनैना का घर से निकलना बंद कर दोगे, ये ठीक नहीं होगा।

तेजूः अच्छा, तो ठीक क्या होगा?

मुनियाः वह पढ़–लिख लेगी तो उसके काम ही आएगा, नहीं तो मेरी तरह घर के चूल्हे–चौके में ही फंस कर रह जाएगी।

तेजूः मेरी सुनैना के ससुराल वालों से बात हुई थी। वे लोग तुरंत ब्याह करने की बात कह रहे थे। उनकी भी एक बेटी है वे भी उसका ब्याह करना चाहते हैं। उनको डर है कि कहीं वो इधर–उधर न हो जाए।

मुनियाः हमारी सुनैना ऐसी–वैसी नहीं है।

तेजूः मैं जानता हूं कि हमारी बिटिया बहुत सयानी है। पर मैं ठहरा उसका बाप, जवान होती बिटिया की जब तक मैं ब्याह न कर दूं, तब तक मुझे चैन नहीं आएगा। आज नहीं तो मैं क्या बुढ़ापे में लड़का ढूढ़ने निकलूंगा उसके लिए, गांव वाले भी हजार ताने सुनाएंगे।

सातवां दृश्य

गांव का पहला व्यक्तिः कोई खोट है लड़की में उसी मारे घर में बैठा रखा है।

दूसरा व्यक्तिः रिष्ते ही नहीं आते कोई भी।

तीसरा व्यक्तिः देखो आखिर कब तक बेटी को बैठाकर खिलाता है।

आठवां दृश्य

सूत्रधार (डफली बजाता हुआ)।

न जाने आखिर तेजू को कौन समझाए,

उसे सही बात कौन बताए!

लोगों के कहे पर जाना ठीक नहीं,

बेटी को पढ़ाना–लिखाना है सही!

पर इतनी सी बात तेजू को न समझ आए,

वह तो बस अपनी रट लगाए।

वह करता रहे अपनी मनमानी,

क्योंकि सुनैना हुई सयानी!

नौवां दृश्य

सुनैना के स्कूल की टीचर तेजू से गांव में मिल जाती हैं।

टीचरः नमस्ते तेजू जी, मैं आपके घर ही जा रही थी, अच्छा हुआ जो आपसे मुलाकात यहीं हो गई।

तेजूः मेरे घर?

टीचरः सुना है कि आपने सुनैना की शादी करने की रट लगा रखी है।

तेजूः हां तो क्या करें, सारी उम्र उसे घर में बैठाए रहें!

टीचरः मैं समझ सकती हूं, एक बेटी के बाप के मन में कैसे–कैसे विचार मंडरा रहे होते हैं। यही न कि लोग क्या कहेंगे, उम्र हो जाने पर कौन करेगा मेरी बेटी से ब्याह!

तेजूः हां तो हम ऐसा सोच रहे हैं तो क्या गलत कर रहे हैं?

दसवां दृश्य

पास में खड़ा तेजू का एक दोस्त बीच में बोल पड़ता है।

फौलाद सिंहः तुम ठीके सोच रहे हो तेजू भैया! आस–पास की इतनी सारी लड़कियों की शादी हो चुकी है, फिर हमारी ही लड़की क्यों रह जाए।

बहादूरः और भैया पढ़ा–लिखा के कौन सा तोप चलाना है उनको, आखिर करना तो चूल्हा–चौका ही है न!

फौलादः हमारी बेटी को भी पढ़–लिख कर कुछ बनने का भूत सवार था, लेकिन एक दिन उसे मारपीट दिया अच्छे से, तब से उसका सब भूत उतर गया पढ़ने–लिखने का।

तेजूः और भैया हम गरीब आदमी अपनी बेटी के दहेज के लिए पैसा जुटाएं या पढ़ाई करवाएं, जिसका हमें कउनो फायदा नहीं।

टीचरः क्या बेकार की बात कर रहे हैं आप सब। अगर बेटी पढ़–लिख कर कुछ बनना चाहती है तो इसमें हर्ज ही क्या है। बेटी पढ़ेगी तो अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी तो इसमें आपको ही फायदा होगा न।

बहादूरः आपका मतबल है कि हम अपनी बेटी को पढ़ा–लिखा कर उससे नौकरी करवाएं?

फौलादः अरे तो इस नौकरी करने वाली लड़की से शादी कौन करेगा, कभी सोचा भी है?

तेजूः और तो और भैया पढ़ाई में उम्र ज्यादा हो गई तो दोगुना दहेज भी तो हमें ही देना पड़ेगा न!

टीचरः अरे पढ़ाई–लिखाई तो जीवन भर हमारे काम आती है और बेटा हो या बेटी कम से कम ग्रेजुएषन तक तो पढ़ाई पूरी जरुर करवानी चाहिए। षिक्षा से मतलब केवल नौकरी कराना थोड़ी न है। अगर वे षिक्षित है तो अपने गांव में रहकर भी कुछ उद्योग कर कामयाबी हासिल कर सकती है। वे आपके खेती को बेहतर बनाने में भी योगदान कर सकती है। षिक्षा प्राप्त करने के बहुत फायदे हैं और रही बात दहेज की, तो मैं षिक्षित थी और नौकरी करती थी इसलिए मेरे पति ने दहेज लेने से मना कर दिया। उन पर उनके रिष्तेदारों ने बहुत जोर डाला, लेकिन उनको एक षिक्षित जीवन संगनी चाहिए थी, दहेज की चादर में लिपटा कोई उपहार नहीं।

फौलादः चलो एक बार हम आपकी बाद मान भी लेते हैं और अपनी बेटी को पढ़ा देते हैं लेकिन आपको अंदाजा है हमारी गरीबी का, पढ़ाई में मामूली पैसा खर्च थोड़ी न होता है।

बहादूरः या तो भैया पढ़ाई लो या फिर परिवार ही चलाई लो!

तीनों दोस्त हंसने लगते हैं – हा हा हा..... ।

टीचरः आप सबको पता भी है कि सरकार कन्या उत्थान योजना के तहत लड़कियों को जन्म से लेकर उनके ग्रेजुएषन होने तक पूरा योगदान करती है। सरकार लड़कियों के लिए षिक्षा, पोषाक और यहां तक कि सैनिटरी नैपकिन की भी राषि देती है। जन्म से लेकर ग्रेजुएषन तक 54,100 रुपए की राषि हर लड़की को दी जाती है। 12वीं पास होने पर 10,000 की राषि भी मिलती है। साथ ही अगर ग्रेजुएषन कर लिया तो 25,000 भी मिलते हैं।

फौलादः अरे बाप रे, इतनी सारी जानकारी तो हमें किसी ने भी नहीं दी।

बहादूरः इतना पैसा सरकार देती है, अरे वाह!

टीचरः अगर आपको और भी जानकारी चाहिए तो आप अपने गांव की आषा, आंगनवाड़ी दीदी, टोला सेवक, तालीम वर्कर आदि से भी बात कर सकते हैं।

तीनों दोस्त टीचर की बात सुनकर चौंक जाते हैं।

सभी दोस्त साथ मेंः सरकार ये सब योजनाएं दे रही हैं और हम इन सबसे अनजान थे।

ग्यारहवां दृश्य

सूत्रधार (डफली बजाता हुआ)।

टीचर की बात सुन सभी हैरान हुए,

सभी अपनी बातों को सोच परेषान हुए।

सभी ने टीचर की बातों से एक सीख लिया,

एक–दूसरे से बेटी को पढ़ाने का वचन किया!

अब बेटी भी पढ़ेंगी–लिखेंगी,

अपने पैरों पर खड़े हो कुछ करेंगी!

ये सब जान तेजू हुआ ज्ञानी,

क्योंकि आखिरकार सुनैना हुई सयानी!

बारहवां दृश्य

तेजू के घर के आंगन में सभी दोस्त बैठ कर बात करते हुए, तभी एक व्यक्ति उनकी ओर आते हुए।

फौलादः वो देखो, उधर से दुखिया आए और अपने दुखों का पिटारा लाए।

बहादूरः दुखिया लगता है गुस्से में है, आज तो बम फूटेगा।

तेजूः लगता है इनको भी बेटी की चिंता सताए, तभी तो भागे–भागे आए।

तेरहवां दृश्य

दुखिया गुस्से में बात करता हुआ।

दुखियाः कमली कहां है?

तेजूः आओ, आओ दुखिया।

दुखियाः वो सब छोड़ो, मेरी बेटी कहां है वो बताओ।

तेजूः आज सुबह सुनैना से मिलने आई थी। स्कूल के बाद अपने दोस्तों के पास चली गई होगी। पर दुखिया भैया बात क्या है, इतने गुस्से में क्यों लग रहे हो?

फौलादः हां दुखिया, बैठ जाओ इतना गुस्सा भी सेहत के लिए ठीक नहीं।

दुखियाः देखो तेजू बच्चों के नाटक तुम्हें अच्छे लगते होंगे, पर मुझे नहीं। अपनी बेटी सुनैना से कह दो कमली से दूर रहे। घंटों–घंटों घर से बाहर रहती है बिना बताए।

तेजूः ये क्या कह रहे हो भाई।

दुखियाः देखो बेटी तुम्हारी भी है, गली–गली मंडराती रहे अच्छा नहीं लगता। तुमने तो अकलमंदी में अपनी बेटी की शादी तुड़वा दी। अब कमली का ब्याह भी तय हो गया है। दिन, तारीख, महीना, लेन–देन सब कुछ तय हो गया है। अब ऐसे में कुछ हो जाए मैं बर्दाष्त नहीं करुंगा।

तेजूः हां दुखिया, बेटी तो मेरी भी है। तुम्हारा दर्द समझ सकता हूं। पर एक बच्ची जिसकी पढ़ने–लिखने की उम्र है, उसे घर गृहस्थी में कैसे डाल सकते हो।

दुखियाः पर कुछ समय पहले तुम भी तो बड़ी जोर–षोर से तैयारी में लगे थे, अब क्यों भाषण दे रहे हो?

तेजूः मैं अनजाने में सुनैना की शादी कराने की गलती जरुर कर रहा था, पर अब टीचर ने पढ़ाई का मोल बताकर मेरी आंखों से पट्टी हटा दी है। अब किसी की बेटी के साथ ऐसा अत्याचार नहीं होने दूंगा। 18 साल से कम उम्र की लड़की का ब्याह करना कानूनी जुर्म है, ऐसा करने से सजा भी होती है।

दुखियाः देखो भैया, तुम जो कह रहे हो, हो सकता है ठीक हो, पर मैं ठहरा गरीब आदमी। बेटी को पढ़ाना–लिखाना और घर में बैठा कर रखना, हमारे बस की बात नहीं है। अब इतनी मुष्किल से एक लड़का मिला है।

तेजू दुखिया को एक कच्चा घड़ा दिखाकर उदाहरण देता हुआ।

तेजूः इसे देख रहे हो, कच्चा घड़ा, टीचर जी ने ही मुझे समझाया क्योंकि कुछ दिन पहले मैं तुम्हारी तरह ही नासमझ था। हमारी बेटियां इस कच्चे घड़े की तरह ही हैं। न तो इसमें पानी टिकेगा न ही कुछ और। उल्टा और जोर लगाएंगे तो यह टूट जाएगा, ठीक इसी तरह हमारी बेटियां हैं। अगर कम उम्र में उनकी शादी कर दी जाए और घर गृहस्थी का बोझ उन पर डाल दिया जाए, तो वह टूट जाएंगी। इस कच्चे घड़े को वक्त देना होगा दुखिया। बेटियों की सही उम्र में ही शादी करना ठीक होगा और शादी करने से पहले उनका पढ़ना–लिखना जरुरी है, ताकि वे भी अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

चौदहवां दृश्य

पीछे से मुनिया बाहर आते हुए।

मुनियाः दुखिया भैया, सुनैना के पिता जी ठीक ही कह रहे हैं। कुछ समय पहले भी इनको समझाना कठिन था। पर टीचर के समझाने पर इन्होंने बेटी की सही उम्र में शादी करने के फायदों को समझा और सुनैना को पढ़ाने का फैसला किया।

फौलादः हां भई हम सबने तो यह फैसला ले लिया, अब है तुम्हारी बारी।

बहादूरः अगर ऐसे नहीं मानोगे तो दूसरा तरीका भी आता है हमें।

दुखियाः अरे नहीं, नहीं। इसकी जरुरत नहीं पड़ेगी बहादूर भैया। जब आप सभी ने शपथ ली है तो जरुर ही बेटी की भलाई के लिए ही ली होगी।

तेजूः ये हुई न बात।

पंद्रहवां दृश्य

सभी एक साथः तो आप भी ले ये संकल्प, अपनी सोच का करेंगे कायाकल्प, पहले बेटी को पढ़ाएंगे, उसको कुछ बनाएंगे, तभी सही उम्र में शादी कराएंगे।

भोला का फैसला!

पहला दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

अरे ओ भईया, भाभी,

सुनो ओ चाचा, चाची,

तुम भी सुनो ओ दादा दादी!

देखो क्या हुआ शालू और नेहा के साथ,

आओ दिखाएं भोला, लता की अनोखी बात,

आओ देखो मजेदार कहानी,

तुम भी देखो, अरे ओ नाना–नानी!

सब लोग देखो, सब लोग जानो,

सही गलत को पहचानो।

आओ, आओ, देखो–देखो

आओ, आओ, देखो–देखो.....

दूसरा दृश्य

(शालू और नेहा जोर–जोर से गाना गाते हुए)

लकड़ी की काठी, काठी पे घोड़ा, घोड़े के दुम पे जो मारा हथौड़ा.....

भोलाः (जल्दबाजी में पुकारते हुए) अरे लता जल्दी चलो भाई, देर हो रही है।

लताः आई जी आई, ठीक से तैयार भी होने नहीं देते!

भोलाः (बड़बड़ाते हुए) घंटे भर से यही सुन रहा हूं, आई जी आई! (दर्षकों से बात करते हुए) आप सब भी देख लो हमें अपनी बेटियों के स्कूल जाना है, देर हो रही है पर इससे इनको क्या फर्क पड़ता है!

लता: (भोला की ओर आते हुए) देखो जी, सब कुछ बोल देना, पर मेरे सजने संवरने पर तो बिल्कुल भी नजर ना लगाना!

भोला: जी समझ गया, अगर इजाजत हो तो, अब चलें!

लता: शालू नेहा, चलो जल्दी, देर हो रही है। (लड़कियों पर बड़बड़ाते हुए) इन लड़कियों के चक्कर में हर समय लेट ही होता है।

भोला: हा हा हा, ये लो जी कर लो बात, ये तो वही कहावत हो गई, उल्टा चोर कोतवाल को डांटे!

तीसरा दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

इस कहानी की हर बात निराली,

भोला ने अच्छे से घर की बागडोर संभाली!

उसने अच्छे बुरे सारे फैसले लिए,

अपने फैसलों को लता से भी साझा किए।

पर कभी–कभी इन दोनों के विचार नहीं मेल खाते,

और ये दोनों चिंताओं की उलझन में रह जाते।

आओ इसी उलझन की बात सुनें,

चलो मिलकर सही गलत का फैसला चुनें!

चौथा दृश्य

(स्कूल का दृष्य, स्कूल की हलचल, स्कूल का बैनर लेकर खड़ा एक व्यक्ति, कुछ बच्चे खेलते हुए! भोला, लता अपने दोनों बेटियों शालू और नेहा के साथ स्कूल में जाते हुए!)

भोला और लता: टीचर जी नमस्ते!

टीचर जी: अरे भोला और लता, नमस्ते, नमस्ते! बधाई हो भाई तुम दोनों को, अब तो मिठाई खिलानी ही पड़ेगी!

लता: मिठाई?

भोला: मिठाई किस बात की टीचर जी!

टीचर जीः इतना चौक क्यों रहे हो तुम दोनों! तुम्हारी दोनों बेटियां पास हो गई हैं और शालू तो अपनी कक्षा में स्थान भी लाई है। कुछ भी बोलो बड़ी होनहार बिटिया है।

लताः (षालू को शाबाषी देते हुए) शाबाश शालू, टीचर जी हमारे खानदान में पहली बार बेटी ने यहां तक पढ़ाई पूरी की है, सच में शालू के ऊपर गर्व है। बस कभी–कभी नेहा की चिंता लगी रहती है, ये तो पूरा दिन लड़कों के बीच कबड्डी–कबड्डी खेलती रहती है, इसका तो पढ़ने में मन ही नहीं लगता।

टीचर जीः अरे तो इसमें चिंता की क्या बात है, शालू पढ़ाई में बेहतर है, तो नेहा खेलकूद में, आजकल खेलकूद में भी लड़कियां खूब नाम कमा रही हैं।

भोलाः हम भी देखते हैं महारानी जी कितना नाम कमाती हैं।

टीचर जीः इतना मत सोचिए भोला जी, बस दोनों की षिक्षा पूरी करने दीजिए, बाकी सब अच्छा ही होगा। षिक्षा से याद आया, आप दोनों ने सोचा भी है कि शालू आगे की पढ़ाई कहां से करेगी या किस इंटर कॉलेज में दाखिला लेगी?

लता और भोलाः आगे की पढ़ाई?

टीचर जीः मेरी इस बात को सुन तुम दोनों एक दूसरे का चेहरा क्यों देखने लगे? क्यों भाई, शालू को आगे पढ़ाने का मन नहीं है क्या?

लताः (हिचकिचाते हुए) जी दरअसल, शालू के पिता जी, वो .....!

भोलाः (लता की बात को बीच में काटते हुए) टीचर जी, दरअसल शालू की शादी के लिए एक अच्छा रिष्ता आया है, तो मैं सोच रहा था कि क्यों ना इस रिष्ते को हां कर दिया जाये!

टीचर जीः क्या! यानी आप शालू की शादी कराना चाहते हो! वो भी इस उम्र में!

भोलाः तो क्या करें टीचर जी, ऐसा अच्छा रिष्ता बार–बार थोड़ी ना आएगा और शालू को पढ़ा दिया, जितना पढ़ाना था। अब इसे सारी उम्र पढ़ाते ही रहेंगे क्या?

टीचर जीः देखो भाई ऐसा करना बहुत गलत होगा। जल्दबाजी में ऐसा फैसला लेने से शालू की जिंदगी बर्बाद हो सकती है। जल्दी शादी के नुकसान के बारे में मैं आपको जरुर बताउंगी। आप दोनों इस शुक्रवार को स्कूल आइये हम इस पर बात करेंगे।

पांचवा दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

शालू थी बड़ी होषियार,

तभी तो सभी उसे करते थे प्यार।

शालू का मन पढ़ाई में खूब लगे,

उसके मन में कुछ बनने के सपने सजे।

लता बेटी को पढ़ाना चाहे,

पर भोला को आगे का भविष्य न समझ आए।

उसे तो अनेकों उलझन सताए।

छठा दृश्य

(भोला अपने दोस्तों के साथ बैठकर बात करता हुआ!)

लोटनः (षायराना अंदाज में) अर्ज किया है, भोला भईया की तो इसी में है भलाई, कि जल्दी से कर दे अपने बेटी की सगाई।

राजूः (हा हा हा) भाई लोटन ने बात 100 आने की कही है तुमने। अब तो भोला को खीर–पूड़ी की दावत दे ही देनी चाहिए!

लोटनः खीर–पूड़ी के तो भईया हम दिवाने हैं, खीर–पूड़ी तो हम खूब खाएं, चाहे क्यों ना खाते खाते मर ही जाएं।

राजूः सही कहा लोटन भईया, खीर–पूड़ी का नाम सुनते ही मुंह में पानी आ गया, खीर, पूड़ी, सब्जी और बुनिया, तो फिर भाड़ में जाए दुनिया!

भोलाः अरे भाई, तुम सब को खीर–पूड़ी तो खिला दूंगा, पर पहले शालू की उम्र तो हो जाने दो!

लोटनः उम्र? अब क्या शालू की बुढ़ापे में शादी करोगे क्या भाई! देखो भईया 100 बात की एक बात, सयानी बिटिया अपने ससुराल में शोभा दती हैं, घर में नहीं और तुमको तो पता ही है जमाने का, कुछ ऊंच–नीच हो गई तो पूरी उम्र पछताने के अलावा कुछ नहीं रह जाएगा।

राजूः और तो और, तुमने पैसे का पेड़ लगा रखा है क्या, दहेज के लिए पैसे कहां से लाओगे, कभी सोचा भी है।

भोलाः तुम्हारी सब की बात अपनी जगह ठीक तो है, पर अभी शालू पढ़ना चाहती है।

राजूः ऐसा लगता है पढ़ा–लिखा कर उसे कलेक्टर बना दोगे और भईया वह पढ़ लिखकर तुम्हें थोड़ी ना देगी। उसके कमाने पर तो ससुराल का भला होगा ना की तुम्हारा।

भोलाः (पररररररररररर)!

(इन सब बातों–बातों में उन लोगों के बीच भोला का फुफेरा भाई फुलचन आ पहुंचता है।)

फुलचनः (भोला का पररर शब्द को सुन गाना गाते हुए) परदेषी, परदेषी जाना नहीं.....

राजूः क्या फुलचन आते ही अपना गाना शुरु कर दिया!

फुलचनः (मजाकिया अंदाज में) भोला भईया, पररर बोल कर चुप हो गए, तो मैं पर से गाना शुरु कर दिया, मैंने सोचा आप लोग महफिल बनाकर अंताक्षरी खेल रहे होगे!

सभी दोस्तः हा हा हा हा हा!

लोटनः ये सब मजाक छोड़ो, भोला की चिंता दूर करो, इनके झोले में शालू के लिए अच्छा रिष्ता जरुर होगा!

राजूः हां हां, फुलचन आया समझो अच्छा रिष्ता लाया। गांव में ज्यादातर रिष्ते इन्हीं की बदौलत तो हुए हैं। जैसे जौहरी सोना परखता है वैसे ही ये रिष्ता परख लेते हैं।

फुलचनः मैं तो एक महीने पहले ही भोला भईया की बेटी शालू के लिए मस्त रिष्ता लेकर आया था, पर भोला भईया है कि शादी का नाम ही नहीं लेते। लड़का शालू के मुताबिक एकदम फिट है और वह घर का इकलौता है और पास में जमीन जायदाद भी है। मैं तो कहता हूं इससे अच्छा रिष्ता तो हो ही नहीं सकता। ऐसा लड़का दीया लेकर खोजने से भी नहीं मिलेगा।

राजूः अरे वाह, अब इसमें सोचना ही क्या भोला, तुम्हारी शालू की उम्र हो गई है, इसलिए मैं तो कहता हूं बिना देर किए बस इस रिष्ते को हां कर दो।

भोलाः (कुछ अनमने मन से) हमममममममम! सोचता तो मैं भी हूं पर समझ में नहीं आ रहा क्या करुं।

फुलचनः इतना कुछ समझाने के बाद भी तुमको कुछ समझ नहीं आ रहा?

लोटनः चलो भईया, अब तो भोला की चिंता उसी के सर। अब यही जाने इसको अपनी बेटी के साथ क्या करना है। हम तो सही–गलत ही बता सकते हैं ना।

राजूः सही कहा लोटन भईया!

सातवां दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

अब भोला भईया को चिंता सताए,

क्या करें उनको कुछ समझ न आए।

उन्होंने रात दिन सोचा,

शायद नहीं मिलेगा ऐसा मौका।

दोस्तों की बातें उन्हें सच्ची लगे,

गांव के तानों से ये हरदम डरें।

भोला ने रिष्ते की बात लता को बताई,

देखते हैं, इसके बाद दोनों ने क्या गुल खिलाई!

आठवां दृश्य

भोलाः (लता को पुकारते हुए) अजी सुनती हो शालू की अम्मा, कहां चली गई!

लताः अरे क्यों चिल्ला रहे हो, यहीं तो हूं, दो मिनट देखा नहीं कि चिल्लाना शुरु कर दिया और ये आपके चेहरे पर बारह क्यों बजे हुए हैं? अभी तो आप अपने दोस्तों के साथ बड़े ठहाके लगा रहे थे।

भोलाः अरे अभी फुलचन आया था।

लताः फुलचन आया था, तो इसमें उदासी वाली कौन सी बात है?

भोलाः अरे वो उसी रिष्ते के बारे में बता रहा था, कह रहा था, परिवार बहुत खानदानी है, लड़का भी देखने में सुंदर है। हमारी बिटिया वहां आराम से रहेगी।

लताः क्या जी, आपने इस उम्र में शालू की शादी की बात सोच कैसे ली। अभी उसकी उम्र ही क्या हुई है? अभी थोड़ी और बड़ी हो जाती तो कर देते उसकी शादी।

भोलाः सोचता तो मैं भी हूं, पर बेटी पराया धन होती है और पराये धन को घर में रखना कैसी समझदारी है? अपने मां–बाप के लिए बेटियां बड़ी जिम्मेदारी होती है। कल को कुछ ऐसा वैसा ना हो जाए, इससे पहले उसका ब्याह कर हिफाजत से ससुराल भेज देने में ही समझदारी है। तुम समझती क्यों नहीं, जो कुछ भी सोच रहा हूं, हम सब की भलाई के लिए ही सोच रहा हूं। तुमने कभी दहेज की बात सोची है?

लताः दहेज के चक्कर में अपनी बेटी की जल्दी शादी कर देना..... ये कैसी समझदारी है आपकी?

भोलाः बेटी जितनी बड़ी होती है उसकी उम्र के साथ दहेज बढ़ता जाता है। लड़का अच्छा है घर अच्छा है, नेग–नगद का भी खर्चा नहीं है। मैंने तो सोच लिया है शालू की शादी के बारे में कल ही लड़के के परिवार से मिलकर आता हूं।

(ये सब बोल भोला गुस्से में वहां से चला जाता है और लता उदास बैठ जाती है।)

नौवां दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

आखिर भोला ने कर लिया विचार,

जल्दी शादी कर लेना ही है दहेज से बचने का सही उपचार।

वह लता की एक ना सुना,

अपनी जिम्मेदारी से बचने का रास्ता चुना।

अब क्या उसको कोई समझा पाएगा,

क्या उसके विचार में परिवर्तन लाएगा।

अब तो ये आगे ही जान पाएंगे,

तभी आगे की गुत्थी सुलझाएंगे।

दसवां दृश्य

(टीचर के बुलाने पर भोला और लता शुक्रवार को उनसे मिलने पुनः स्कूल पहुंच जाते हैं।)

टीचर जीः मैं समझ सकती हूं, एक बेटी के बाप के मन में कैसे–कैसे विचार मंडरा रहे होते हैं। पर उससे पहले बेटियों को पढ़ाना जरुरी है। बेटी पढ़ेगी अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी तो इसमें आपको ही फायदा है और पढ़ाई–लिखाई तो जीवन भर हमारे काम आती है और बेटा हो या बेटी कम से कम स्नातक तक तो पढ़ाई पूरी जरुर करानी चाहिए। षिक्षा से मतलब केवल नौकरी कराना थोड़ी ना है। अगर वे षिक्षित हैं तो अपने गांव में रहकर भी कुछ उद्योग कर कामयाबी हासिल कर सकती हैं। वे आपकी खेती को बेहतर बनाने में भी आपकी मदद कर सकती हैं।

भोलाः आपकी बात तो ठीक है टीचर जी, परन्तु ज़रा आप ही सोचिए हम दो बेटियों को इस महंगाई में कहां से पढ़ा सकते हैं। बच्चे तो सपने देखते हैं परन्तु मां–बाप को उनके सपने पूरे करने के लिए पैसे कहां से आएंगे ये उनको कहां पता होता है। अब हमारी इतनी हैसीयत तो नहीं ना कि दोनों को पढ़ा–लिखा सकें और दो वक्त की रोटी का भी जुगाड़ कर सकें।

लताः शालू के पिता जी ठीक कह रहे हैं टीचर जी। मैं चाहती तो हूं कि मेरी बेटी पढ़े और कुछ बने परन्तु सोचने और करने में फर्क तो होता है ना।

टीचर जीः हमममम! आप लोगों की चिंता मैं बखूबी समझ सकती हूं, परन्तु अब इन सबसे डरने की बात नहीं, इसका भी उपाय है हमारे पास!

लताः उपाय है मतलब?

टीचर जीः यही कि सरकार ने आपका ये सब बोझ अपने सर पर ले लिया है बस आप लोग बेटियों को पढ़ाने का हौसला देते रहिए।

भोलाः टीचर जी आपकी बात हमें तो कतई समझ में नहीं आ रही। आखिरकार आप कहना क्या चाहती हैं?

टीचर जीः आप सबको पता भी है कि सरकार मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना के तहत लड़कियों को जन्म से लेकर उनके ग्रेजुएषन होने तक पूरा योगदान करती है। सरकार लड़कियों के लिए षिक्षा, पोषाक और यहां तक कि सेनैटरी नैपकिन की भी राषि देती है। जन्म से लेकर ग्रेजुएषन तक 54,100 रुपए की राषि हर लड़की को दी जाती है। 12वीं पास होने पर 10,000 की राषि भी मिलती है। अगर ग्रेजुएषन कर लिया तो 25,000 भी मिलते हैं।

लताः (चौंकती हुई) अरे बाप रे बाप, इतना सब सरकार हमारी बेटियों के खातिर कर रही है और हमें पता ही नहीं।

टीचर जीः अगर आपको और भी जानकारी चाहिए तो बाल विवाह एवं दहेज उन्मूलन कार्यक्रम की अधिक जानकारी के लिए अपने प्रखंड अधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी/अनुमंडल पदाधिकारी से संपर्क कर सकते हैं या मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना की अधिक जानकारी के लिए अपने हेडमास्टर, विकास मित्र, टोला सेवक, तालीमी मरकज़ आदि से संपर्क करें या टोल फ्री नंबर 181 पर फोन करें।

भोलाः टीचर जी ये सब तो ठीक है, सरकार पढ़ाने के पैसे तो दे देगी परन्तु इससे तो हमारी आगे की चिंता तो कम नहीं होगी ना। आखिरकार बेटियों के दहेज का बोझ तो हमारे ही ऊपर आना है ना और अगर हम एक बेटी का बोझ उठा भी ले तो दूसरी बेटी के लिए दहेज की व्यवस्था कहां से करेंगे। उसके लिए तो घर ही गिरवी रखना पड़ जाएगा। हम तो भाई इस जिम्मेदारी से जितना जल्दी निकल जाएं, उतना ही हमारे लिए भला होगा क्योंकि बढ़ती उम्र के साथ–साथ दहेज भी तो बढ़ता ही जाएगा।

टीचर जी: भोला जी, षिक्षा प्राप्त करने के अनेको फायदे हैं और रही बात दहेज की तो, षिक्षित होने से दहेज भी नहीं देना पड़ता। नहीं विष्वास होता तो आप मुझे ही देख लिजिए। मैं षिक्षित थी और नौकरी करती थी, इसलिए मेरे पति ने दहेज लेने से मना कर दिया। उन पर उनके रिष्तेदारों ने बहुत जोर डाला, लेकिन उनको एक षिक्षित जीवन संगनी चाहिए थी, न की दहेज से लदी हुई पत्नी।

(लता और भोला टीचर जी की इस बात को सुन चौक कर एक दूसरे को देखने लगते हैं।)

ग्यारहवां दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

टीचर की बात सुन भोला हुआ हैरान,

क्या करे, क्या ना करे ये सोच वह हुआ परेषान।

आखिर आगे टीचर ने उसे क्या दिया ज्ञान,

क्या भोला टीचर की बातों पर देगा ध्यान।

अब शालू पढ़ेगी या डोली चढ़ेगी,

या फिर क्या करेगी।

आइये देखें आगे की कहानी,

क्या दूर हुई भोला की परेशानी।

बारहवां दृश्य

टीचर जी भोला और लता को एक कहानी सुनाती हैं। टीचर कहानी एक नरेटर के रुप में कहानी बोलकर प्रस्तुत करती हैं, टीचर जैसे–जैसे कहानी सुनाती हैं, वैसे–वैसे उस कहानी को पात्रों द्वारा दृष्य के रुप में प्रस्तुत किया जाता है, जिससे दर्षक कहानी को सुनने के साथ–साथ उसे देख भी सकें।

टीचर जी: (दृष्य की प्रस्तुति के साथ) अनीता नाम की एक लड़की थी। बचपन में ही उसके पिता को लकवा मार गया था, जिसकी वजह से पूरे घर का भार उसकी मां पर आ गया था। उसकी मां खेत में कड़ी मेहनत करती थी। अनीता का पढ़ाई व खेलकूद दोनों में मन लगता था, इसीलिए उसकी मां चाहती थी कि उसकी बेटी अपने पैरों पर खड़ी हो और अपने और हमें इन परिस्थिति से बाहर निकाले। अनीता ने अपनी मां की मेहनत को बेकार नहीं जाने दिया। उसने कड़ी मेहनत कर 12वीं पास की और आगे की पढ़ाई के लिए वह बेगुसराय गयी, जहां जाकर स्नातक की पढ़ाई पूरी कर ली। कुछ समय

बाद वह अपने गांव वापस आई और एक रोजगार खोल लिया। वह गांव के बच्चों को सिलाई सिखाने लगी व साथ ही अपने माता–पिता की सेवा भी करती रही। आज वह अपने गांव में रहकर रोज़गार कर पैसे भी कमा रही है। देखते ही देखते अनीता की सराहना पूरा गांव करने लगा। कुछ समय बाद अनीता के लिए एक अच्छे लड़के का रिष्ता आया। लड़की को देख लड़के के घरवाले बहुत प्रभावित हुए और उसे अपने घर की बहु बनाने के लिए राजी हो गए। लड़का भी बहुत अच्छा था और नौकरी भी करता था। उसने अपने घरवालों को समझाया और बिना दहेज के अनीता के साथ शादी कर ली।

(टीचर की कहानी को सुनकर व देखकर भोला और लता आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। अब भोला को सही गलत सब समझ में आ जाता है।)

भोलाः टीचर जी आपने अनीता की कहानी संनाकर तो मेरे आंखों की पट्टी ही हटा दी। लता भी मुझसे यही ज़िद करती थी कि पहले हमें दोनों बेटियों को पढ़ना चाहिए, परन्तु मैं ही जिम्मेदारी व समाज के डर से अपनी शालू की शादी कराने के चक्कर में पड़ा रहा। लेकिन अब मैं ऐसी गलती कभी नहीं करुंगा और रही बात समाज के दबाव की तो मैं सबको यही सलाह दूंगा कि पहले पढ़ाई जरुरी, फिर सही उम्र में ही सगाई जरुरी!

टीचरः शाबाष भोला, मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

लताः टीचर जी अब हम भी अनीता की तरह अपनी बेटियों को पढ़ाएंगे और उन्हें भी उनके पैरों पर खड़ा होने देंगे।

भोलाः अब हमारी बेटियां भी पढ़ेंगी–लिखेंगी होंगी नवाब और अपने पैरों पर खड़े होकर दिखाएंगी जनाब!

लताः शालू के पिता जी सही पकड़े हैं!

सभीः हा हा हा हा

तेरहवां दृश्य

(सूत्रधार ढोलक बजाता और गीत गुनगुनाता हुआ)

भोला ने सही समझ बनाई,

आखिरकार शालू की नहीं की सगाई।

अब शालू और नेहा पढ़ेंगी–लिखेंगी,

अपने सपनों को पूरा करेंगी।

तो आप भी इस कहानी को जरुर अपनाइये,

अपने समाज से बाल विवाह और दहेज प्रथा मिटाइये।

ये दोनों ही कानूनी अपराध हैं,

इसे अपने समाज से हटाइये!

बच्चों की षिक्षा पूरी कराइये,

बच्चों की षिक्षा पूरी कराइये।

.....समाप्त.....

नए समाज की ओर
Towards a new dawn

बेटी बचाओ
बेटी पढ़ाओ

बिहार सरकार

सशक्त किशोर
विकसित बिहार

unicef
for every child